MAA OMWATI DEGREE COLLEGE

HASSANPUR

NOTES

SUBJECT: - Medival Societies (Islamic and Europe) (MC)

CLASS:- M.A (HISTORY 1st SEM.)

1. मुगल साम्राज्य पर मुख्य यूरोपियन स्रोतों के बारे में विश्लेषण रूप में बताइए

2. मध्यकाल में प्राचीन भारत की देनों की विवेचना कीजिए

3..प्रश्न महमूद गजनवी तथा मोहम्मद गौरी के भारतीयआक्रणों का संक्षिप्त वर्णन करें तथा उनके परिणामों की व्याख्या करें

महमूद गजनवी तथा मोहम्मद गौरी के आक्रमणों के उद्देश्य एवं प्रभावों का वर्णन करें

प्रश्न **4. मोहम्मद गोरी कौन था उसकी विजय तथा राजपूतों की पराजय के कारण क्या**

5. मुगल शासन व्यवस्था पर एक निबंध लिखिए

मुगल साम्राज्य के पतन संबंधी सिद्धांतों का। परिचय दीजिए

प्रश्न 6. **मुगल साम्राज्य के पतन संबंधी सिद्धांतों का। परिचय दीजिए।**

प्रश्न**7.मनसबदारी व्यवस्था क्या है इसकी विशेषताएं और गुण और दोष बताएं**

प्रश्न **8. मुगल शासन की अंतर्गत औद्योगिक विकास पर प्रकाश डालिए अथवा**

मुगलकालीन कृषि तथा उद्योग की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए

प्रश्न 9. **मुगलों के अधीन ग्रामीण समुदाय पर टिप्पणी लिखिए**

प्रश्न 10. **भक्ति आंदोलन पर एक निबंध लिखिए।**

प्रश्न11.मुगलों के अंतर्गत समाज की प्रमुख विशेषताओ का वर्णन करे अथवा

मुगलकालीन सामाजिक श्रेणियां पर एक नोट लिखें

प्रश्न 1.मुगल साम्राज्य पर मुख्य यूरोपियन स्रोतों के बारे में विश्लेषण रूप में बताइए

Ans मध्यकालीन भारत के राजनीतिक इतिहास के अध्ययन के लिए हमारे पास स्रोतों का विशाल भंडार है इस कल के राजनीतिक इतिहास अध्ययन के लिए मुख्य रूप से फारसी में अंग्रेजी ग को माध्यम बनाया जा सकता है इसके अतिरिक्त इस श्रेणी में कुछ साहित्यिक ग्रंथ भी रहे रखे जा सकते हैं जिनका लेखन विभिन्न भाषाओं में किया गया है इस तरह के अध्ययन के लिए सूफी विभक्ति संतों की रचनाओं पर भी प्रयोग किया जा सकता है लेखन सामग्री के अतिरिक्त इस कल के राजनीतिक जीवन की संरचना के विषय में हमें तत्कालीन भावनाओं तथा सिक्कों से भी कुछ महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है इस तरह की अभिलेख सामग्री का महत्व इतिहास लेखन में काफी ज्यादा है इसके अतिरिक्त इस काल में बाहर से आने वाले विदेशी यात्रियों के वृतांत भी भारत के सामाजिक इतिहास लेखन में हमारी काफी सहायता करते हैं इन स्रोतों का विशेष महत्व है यह है कि इसे साधारण जनता की स्थिति का ज्ञान होता है

1.**अरबी एवं फारसी ऐतिहासिक ग्रंथ**

सल्तनत कालीन पुस्तक

1.**किताब उल हिंद** इस ग्रंथ की रचना अलबरूनी द्वारा अरबी भाषा में की गई थी उसकी अरबी सफा से भाषा पर जबरदस्त पकड़ थी ज्योतिष गणित धर्मशास्त्र और दर्शन में उसकी विशेष रूचि थी जिसके कारण गजनी के शासक महमूद गजनवी ने उसे उसकी मातृभूमि से जबरदस्ती गजनी बुलाया था अलबरूनी के हम ने उसे नाराज कर दिया जिस कारण उसे जेल में डाल दिया गया इसी दौरान उसने संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त किया तथा हिंदू धर्म दर्शन ज्योतिष आदि के अध्ययन में इस भाषा का प्रयोग किया संस्कृत भाषा सीखने के बाद उसने कुछ संस्कृत में ग की अरबी में फारसी में अनुवाद भी किया **11**वीं शताब्दी के उत्तरी भारत के हिंदू समाज दर्शन धर्म में आर्थिक जीवन आदि को जानने का बहुमूल्य स्रोत है

2 पचनामा .सिंध के इतिहास पर प्रकाश डालने वाले इस महत्वपूर्ण ग्रंथ की रचना अरबी भाषा में आठवीं शताब्दी में की गई थी **1216/17** ईस्वी में मोहम्मद अली बिन अनु वक्र नेक वचन के शासनकाल में इसका अनुवाद किया और वह द्वारा सिंह की विजय तथा तत्कालीन सिंह के शासको का वर्णन इसमें प्राप्त होता है डॉक्टर दौड़ पोतने से संपादित करके प्रकाशित किया है

3. **तबकात ए नासिरी.** इस ग्रंथ की रचना मिनहाज सिराज द्वारा की गई थी इस ग्रंथ में मोहम्मद गौरी की तराइन युद्ध की विजय **1280** ई तक की घटनाओं का वर्णन किया है

4. **अमीर खुसरो के ग्रंथ .** सल्तनत काल का महान लेखक है वह बहुमुखी प्रतिभा का धनी था बलबन के शासनकाल से अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत की थी बलबन के अतिरिक्त केतुवाद अलाउद्दीन खिलजी मुबारक शाह खिलजी और गयासुद्दीन तुगलक जैसे सल्तनत कालीन साल्ट का राजकीय संरक्षण प्राप्त था जलालुद्दीन खिलजी के सैनिक अभियानों का वर्णन किया गया है

5. **तारीख ए फिरोजशाही .** सल्तनत काल के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत तारीख के फिरोजशाह है जिसकी रचना जियाउद्दीन बरनी द्वारा की गई उसने बलबन की कल के से फिरोज तुगलक के कल तक का इतिहास पेश किया है उसने **1359** ईस्वी में इस ग्रंथ को पूरा किया था अतः इस रचना में फिरोज तुगलक के शासनकाल में के शुरू के **6** वर्षों तक की घटनाओं का विस्तृत द्वारा प्राप्त होता है

6. **फतवा ए जहांदरी.** इस ग्रंथ की रचना जियाउद्दीन बरनी द्वारा की गई थी इसमें वर्णिका राजनीतिक चिंतन है और वह मुख्य रूप से यह बताता है कि इस्लामी राज्य का स्वरूप कैसा होना चाहिए और सुल्तान के कर्तव्य क्या है यह ग्रंथ वास्तव में तारीख ए फिरोजशाही का दूसरा भाग माना जा सकता है वह आदर्श इस्लामी राजनीति की व्याख्या करता है और विभिन्न विभागों अधिकारियों के कार्यों का विश्लेषण भी करता है

7**. तारीख ए मुबारक शाही.** इस ग्रंथ की रचना **1435** में मेहता सर हिंदी द्वारा की गई थी उसने अपने लेखन की शुरुआत मत गोरी से की है परंतु उसका जोर सैयद शासको के वर्णन पर ही रहा है इसलिए सैयद कल की जानकारी प्रदान करने में यह हमारी काफी सहायता करता है अन्य ग के आधार पर उसने फिरोज शाह तुगलक का भी विरोध दिया है **1351** ई तक इतिहास लेखन के लिए उसने मिनहाज तथा बरनी की ग की सहायता लिए उसने बाद के इतिहास का विवरण व्यक्तिगत ज्ञान व अनुसूचियां के आधार पर प्रस्तुत किया है

8**. सीरीज ए फिरोजशाही.** इस ग्रंथ की रचना किसके द्वारा की गई इसका हमें यह कोई ज्ञान नहीं है शायद इस ग्रंथ की रचना फिर उटगलक के आदेश पर की गई थी इससे प्रतीत होता है कि यह दरबारी स्वरूप वाला ग्रंथ है तथा इसमें फ्रूट तुगलक की काफी प्रशंसा की गई है इसमें थ्रू तुगलक के प्रशासन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है

9. **लोधी राजवंश के स्रोत.** अफगान इतिहासकारों ने अपने राजकीय गौरव की स्मृति को बनाए रखने के लिए इतिहास ग की रचना की उसने लोदी वंश का सूर्यवंश के शासको के जीवन चरित्र तथा शासन प्रबंध का वर्णन किया है तारीख ए सलाउद्दीन अफवाहना की रचना अहमद यादगार द्वारा की गई इस ग्रंथ में वह लोधी से पानीपत के द्वितीय युद्ध में हेमू की मृत्यु तक का विवरण देता है मखदान एवं गाना जिनकी रचना नियम ओला द्वारा की गई है जहांगीर के शासनकाल में इसकी रचना हुई थी तारीख के दौड़ी की रचना अब्दुल्ला द्वारा की गई है इस रचना में लेखक ने बहनोल लोधी से बंगाल के अफगान शासक दाऊद की मृत्यु **1575** तक के इतिहास का विवरण प्रस्तुत किया है

मुगलकालीन पुस्तक

1. **तुजुक ए बाबरी.** यह रचना बाबर की आत्मकथा है जिसकी रचना स्वयं बाबा ने की थी इस पुस्तक की रचना मूल रूप से तुर्की भाषा में की गई है इसका फारसी अनुवाद अब्दुल रहीम खानखाना ने किया था जिन्हें महान मुगल सम्राट अकबर का राजकीय संरक्षण प्राप्त था इस आत्मकथा में बाबर ने **16**वीं शताब्दी के भारत की राजनीतिक सामाजिक धार्मिक स्थिति का वर्णन बड़ी ही रोचक तथ के साथ किया है इस पुस्तक के ऐतिहासिक महत्व को नकारा नहीं जा सकता है

2**. हुमायूंनामा.** इस पुस्तक की रचना हुमायूं की बहन गुलबदन बेगम द्वारा की गई थी भारत के मध्यकालीन इतिहास को जानने का यह महत्वपूर्ण स्रोत है इस ग्रंथ में बाबर से लेकर हुमायूं तक के कल की समस्त घटनाओं का विवरण दिया गया है

3 **तारीख ए रसीदी**. इस पुस्तक की विषय वस्तु भी हुमायूं तथा उसके शासनकाल से संबंधित है इसके रचना मिर्जा हीटर द्वारा की गई थी जिसमें उसने हुमायूं के समय की भारत की राजनीतिक सामाजिक आर्थिक और धार्मिक स्थिति का विवरण प्रस्तुत किया है

4. **तारिक ए शेरशाही**. इस पुस्तक की विषय वस्तु शेरशाह सूरी द्वारा तथा उसका प्रशासन है इसकी रचना अब्बास खान द्वारा की गई थी इसमें लेखक ने शेरशाह सूरी के समय की भारत की सामाजिक स्थिति का वर्णन किया है

5. **तारीख ए सही**. इस ग्रंथ की रचना अहमद यादगार द्वारा की गई है जिसमें उन्होंने **16**वीं शताब्दी की भारत की समाज की स्थिति का वर्णन किया है

6**. अकबरनामा.** अबुल फजल द्वारा फारसी भाषा में इस ग्रंथ की रचना की गई अबुल फजल ने समकालीन राजनीतिक घटनाओं के साथ तत्कालीन समाज में प्रचलित खान-पान जाति व्यवस्था त्योहार धर्म हिंदू राजपूत मुगल संबंधों पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत की है अकबरनामा के एक अध्याय के रूप में आईने अकबरी विशेष रूप से तत्कालीन समाज की विवेचना प्रस्तुत करती है इस पुस्तक का अंग्रेज़ी अनुवाद बलूचिस्तान द्वारा तैयार किया गया था

7**. तबकात ए अकबर.** इस पुस्तक की रचना अकबर के समल में निजामुद्दीन अहमद द्वारा की गई थी इस पुस्तक के माध्यम से हमें अकबर कालीन समाज का अध्ययन करने में काफी सहायता मिलती है

8. तुजुक ए जहांगीरी. यह रचना मुगल सम्राट जहांगीर की आत्मकथा के रूप में है इस रचना के अध्ययन से हमें जहांगीर के समय में प्रचलित सामाजिक रीति रिवाज के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है

विदेशियों की वृतांत

1. मार्को पोलो. वेनिस का निवासी था वह **1274** में चीन पहुंचा उसे समय चीन में को बुलाई कहां का शासन था वह भारत के आंतरिक प्रदेशों में नहीं आया उसने भारत के आंतरिक और विदेशी व्यापार बंदरगाहों का वर्णन किया है उसने भारतीयों के रहन-सहन भजन वेस्टन के विषय में भी लिखा है **13**वीं शताब्दी उत्तरा के इतिहास के लिए मार्को पोलो का विवरण बहुत ही महत्वपूर्ण है

2**. किताब उल रेहला**. **1833** ई भारत और पर आया था भारत आने से पूर्व उसने अफ्रीका अब निबंध पुल की यात्रा की थी नियुक्त किया था सुल्तान ने असंतुष्ट होकर **1342** में उसे इस पद से हटा दिया था फिर बाद में सुल्तान ने संतुष्ट हो जाने पर उसे राजदूत बनकर चीन भेजा वह चीन नहीं पहुंच सका और अपने देश मोरों को वापस चला गया वहां वह मोरक्को सुल्तान के संरक्षण में **25** वर्ष रहा और सुल्तान की अनुमति से उसने अपनी यात्रा का विवरण लिखा जो रे हाल के नाम से प्रसिद्ध हुआ

3**. अब्दुल रज्जाक**. अब्दुल राजा को ईरान के शासक ने विजयनगर के शासक देवराज द्वितीय के दरबार में राजदूत बनाकर भेजा था इसलिए इस विदेशी यात्री नहीं कहा जा सकताहै वह **1442** ईस्वी में विजयनगर आया और **1443** ई तक यहां ठहरा था उसने विजयनगर साम्राज्य के प्रशासन के विषय में लिखा है वह विजयनगर की राजधानी तथा राजा देव राय की दिनचर्या व्यक्तित्व के विषय में भी लगता है इनकी अतिरिक्त उसने तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था आर्थिक जीवन आदि का बारे में लिखा है

4. निकलो काउंटी. विजयनगर साम्राज्य की यात्रा वेनिस नगर के निवासी निकलो कंट्री ने की थी वह **1500** इसी से **1502** ई तक भारत में रहा वेनिस इस काल में यूरोप में भारतीय आयात व्यापार का केंद्र था निकोलो काउंटी ने पूर्व की यह यात्रा अपनी पत्नी के साथ की थी वह वर्ष और कुछ होता हुआ समुद्र मार्ग से भरूच पहुंचा था यहां से वह राजधानी विजयनगर गया

5**. डूऑटो बारबोसा.** यह एक पुर्तगाली यात्री था जो मैगलन के साथ पूरी दीप समूह की यात्रा के लिए पुर्तगाल से **1500** ईस्वी में चला था मैगलन **1517** ईस्वी में अटलांटिक महासागर को पार करके पुर्तगाल वापस पहुंच गया था लेकिन बारबोसा **1519** ईस्वी में वापस पहुंचा भारत में वह **1508** से **9** ईस्वी में रहा था बारबोसाना कालीघाट नगर का विस्तृत वर्णन किया है उसे निकालीकट और मालाबार तट के अन्य दूसरी नगरों में प्रचलित न्याय प्रणाली का भी वर्णन किया है

प्रस्न 2. मध्यकाल में प्राचीन भारत की देनों की विवेचना कीजिए

Ans. प्राचीन भारत की मध्यकाल को देंन

1. **कला के क्षेत्र में देंन** प्राचीन भारत की कलाएं आज भी कलाकारों के लिए प्रेरणा के साधन हैं हमारे देश की शिल्पकारों में अनेक क्षेत्रों में कलाकृतियों की नंबर एक जहां तक वास्तुकला का संबंध है हड़प्पा संस्कृति की नगर योजना आज भी नगर निर्माण के लिए आदर्श है उनकी जल निकास योजना प्रशंसनीय थी वे लोग चित्रकला मूर्ति कला नृत्य कला में भी परिचय थे नंबर दो अशोक के काल में चमकदार पॉलिश करने की कला का विकास हुआ उनके द्वारा बनवाया स्तंभ अपनी चमकदार पॉलिश के लिए बहुत लोकप्रिय हैं तीन नंबर तीन कुशन युग में यूनानी कल से प्रभावित होकर भारत में गांधार कला का विकास हुआ इस कला में शिल्प का भाव तो भारतीय ही रहा पर सजावट और अवयव यूनानी शैली के हैं इसी काल में मथुरा शैली में भगवान बुद्ध की सुंदर मूर्तियां बनी है नंबर चार गुप्त काल में कल की हर पक्ष ने उन्नति की इस कल की चित्रकारी के नमूने अजंता की गुफा में पाए जाते हैं इन चित्रों में जीवंत तथा सौंदर्य है इन चित्रों के रंग इतने बढ़िया और निपुण हैं

2. **साहित्य के क्षेत्र में देंन .** प्राचीन भारत ने विश्व को अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथ प्रदान किए। रघुवीर उनका प्राचीनतम भेद है यजुर्वेद सामवेद और अथर्व भी उनकी देन है ब्राह्मण आदरणीय वनिषद सूत्र वेदांग उपवेद दर्शन रामायण एवं महाभारत के रूप में महाकाव्य जैसे अनेक ग्रंथ उनकी देन है जैन व बौद्ध धर्म के भी अनेक ग्रंथ हैं संस्कृत के कवि कालिदास कर्नाटक अभिज्ञान शाकुंतलम विश्व की श्रेष्ठ कलाकृतियों में से एक माना जाता है संस्कृत भारत के

अनेक भाषाओं की जननी है प्रकृति और पाली भाषा में प्राचीन बहुत तथा जैन साहित्य सुरक्षित है नालंदा विश्वविद्यालय में काशी तक्षशिला विक्रमशिला गया नालंदा प्रसिद्ध विश्वविद्यालय रहे नालंदा विश्वविद्यालय में केवल भारत के निवारण चीन तिब्बत तथा श्रीलंका की विद्यार्थी पढ़ने आया करती थी यहां पर हजारों विद्यार्थी रहते थे राज की ओर से उन्हें मुक्त खान और निवास स्थान दिया जाता था

3. **धर्म के क्षेत्र में देंन.** भारत में धर्म का गहरा प्रभाव रहा है प्राचीन भारतीय जीवन की हर क्षेत्र आर्थिक राजनीतिक साहित्य आदि पर धर्म का गहरा प्रभाव रहा है भारत का प्राचीनतम धर्म ब्राह्मणवाद या हिंदू धर्म था जिसने वर्ण व्यवस्था की व्यवस्था कर समाज को श्रम विभाजन का लाभ दिया बाद में अनेक स्वार्थी ब्राह्मणों ने वैदिक धर्म को कर्मकांडों एवं अंधविश्वास में जकड़ली दिया वर्ण व्यवस्था जटिल हो गई छुआछूत का कलंक समाज को मिला भारत में हिंदू धर्म के अधिक जैन धर्म और बौद्ध धर्म को जन्म दिया बौद्ध धर्म और जैन धर्म में समझ में वर्ण व्यवस्था पर प्रहार किया और संसार को अहिंसा का पाठ पढ़ाया अशोक ने युद्ध में विजई रहकर भी विश्व को शांति का पाठ पढ़ाया अहिंसा और शांति आज भी विश्व के कल्याण के लिए बहुत जरूरी है

4**. दर्शन के क्षेत्र में प्राचीन भारत का योगदान.** भारत के प्राचीन चित्रकों ने यह तय किया कि मानव को चार लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए वह है अर्थ या आर्थिक संसाधन धर्म अथवा सामाजिक नियम व्यवस्था कम अथवा शारीरिक सुख लोग और मोक्ष अथवा आत्मा का उद्धार वह स्थिति होती है जब मनुष्य जीवन मरण से छुटकारा पा लेता है और उसकी आत्मा सदैव के लिए ब्रह्मा का अंश हो जाती है भारतीय दर्शन नास्तिक तथा आस्तिक नामक दो भागों में विभाजित है नास्तिक दर्शन सौगंध चारबाग तथा अहित इन तीनों भागों में विभाजित है आस्तिक दर्शन मीमांसा वेदांत संख्या तथा योग नमक छह भागों में विभक्त है योग दर्शन के अनुसार मोक्ष ध्यान और शारीरिक साधना से मिलता है मोक्ष एवं निर्माण जीवन के अंतिम उद्देश्य हैं या सत्य सर्वप्रथम भारत में ही विश्व को बताया भारतीय उपनिषदों में लोगों में संसार का परित्याग और ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रयत्न करने को कहा अनेक पश्चिमी देशों के विचारक भारतीय दर्शन से प्रेरणा लेते रहे हैं

5. **विज्ञान के क्षेत्र में दें.** प्राचीन भारतीयों ने भी लोगों को दूर करने के तरीके ढूंढे उन्होंने शरीर की बनावट का अध्ययन किया रोगों के कारण ढूंढे उन कर्म के अनुसार दवाई या बनाई गई आर्यों के साहित्य में अनेक दवाइयां का वर्णन आता है उन दवाइयां का अथर्ववेद में उल्लेख प्राप्त है इस वेद में सरस्वती सूक्त है कुछ सूक्त में मानव शरीर का वर्णन है अनेक रोगों के उपचारों का भी वर्णन है औषधि के दृष्टिकोण से वनस्पति का महत्व बतलाया गया है इस प्रकार अथर्ववेद में आयुर्वेदिक औषधियां का अच्छा ज्ञान प्राप्त है प्राचीन काल में जादू टोना एवं अंधविश्वासों में औषधि विज्ञान की प्रगति को रोका तथा साधु संतों ने बोली जनता का शोषण भी खूब किया मौर्य काल में औषधि विज्ञान की तरफ ध्यान दिया गया इस युग के दो प्रसिद्ध औषधि विज्ञान के जानकारी चरक और सुश्रुत हुए उन्होंने कई बीमारियों के इलाजों का वर्णन किया नागार्जुन नमक विद्वान ने राष्ट्र चिकित्सा की रचना करके इस क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किया उनके अनुसार सभी धातुओं जैसे सोना चांदी तम लोहा की तलादी में बीमारियों का इलाज करने की शक्ति है बाणभट्ट अपने समय का सबसे बड़ा चिकित्सक था

6. प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र में दें. भारतीय शिल्प रंगने तथा विभिन्न प्रकार के रंगों को बनाने के कार्य में बहुत निपुण थे भारत में बनाए गए मूल रंग इतने पक्के स्थाई तथा चमकीले होते थे कि अजंता और एलोरा के सुंदर विधि चित्र आज भी जो कहते हैं भौतिक शास्त्र का अध्ययन विभिन्न तारों एवं ग्रहों की स्थिति और ऋतुओं के परिवर्तन के रूप में किया वनस्पति शास्त्र एवं जीव विज्ञान का अध्ययन चिकित्सा शास्त्र के रूप में किया गया आयुर्वेद विज्ञान प्रणाली का विकास मानव शरीर की रचगणित. गणितना का अध्ययन करके किया गया शल्य उपकरणों का वर्णन अथर्ववेद मिलता है अनेक जड़ी बूटियां का अध्ययन दवाइयां को बनाने के लिए किया गया खगोल शास्त्र में चंद्र ग्रहण सूर्य ग्रहण ऋतुओं में परिवर्तन आदि का अध्ययन किया गया

7**. गणित**. के क्षेत्र में तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व तक भारत में तीव्रता से विकास होने लगा भारतीय उन्हें चार विशिष्ट योगदान दिए यह थे अंक पद्धति अंकों का स्थानीय मान निकालना दशमलव पद्धति और शून्य का प्रयोग दशमलव प्रणाली के प्रयोग का सबसे पहले पूरा लिखिए प्रमाण पांचवी ई के प्रारंभ का है भारत से अंक पद्धति का प्रयोग अर्बन ने सीखा और उन्होंने पश्चिमी जगत में भारतीय अंकों का इतना अधिक प्रचार किया कि वह पर अरबी अंकों के नाम से प्रसिद्ध हो गएदशमलव पद्धति का प्रयोग सबसे पहले भारतीय ने किया प्रसिद्ध गणितज्ञ आर्यभट्ट इस पद्धति को जानते थे चीन ने भी दशमलव पद्धति भारत से सीखी भारतीय विद्वान पाइथागोरस की प्रमेय और वर्गों के दुगना करने की सिद्धांत से भली-भाजी परिचित थे गुप्त काल से शताब्दियों पूर्व भारतीय गणितज्ञ की दो शाखाएं पठित गणित और बीजगणित थी

8. **भूगोल.** प्राचीन काल के भारतीयों ने भूगोल के अध्ययन में भी योगदान दिया उन्हें भारत के बाहर के देशों के भूगोल की बहुत कम जानकारी थी परंतु किस देश की नदियां पर्वत श्रृंखलाएं दर्दों तीर्थ स्थान और विभिन्न क्षेत्रों का दर्शन विभिन्न धार्मिक पुस्तकों में किया गया व्यक्ति प्राचीन भारतीय चीन और पश्चिमी देशों से परिचित थे लेकिन उन्हें यह स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं था कि वह क्षेत्र कहां है और भारत तथा इन देशों के मध्य कितनी दूरियां हैं

3.**प्रश्न महमूद गजनवी तथा मोहम्मद गौरी के भारतीयआक्रणों का संक्षिप्त वर्णन करें तथा उनके परिणामों की व्याख्या करें**

महमूद गजनवी तथा मोहम्मद गौरी के आक्रमणों के उद्देश्य एवं प्रभावों का वर्णन करें

मोहम्मद के आक्रमणों के उद्देश्य

1. धन लुटने का उद्देश्य

2. धार्मिक उद्देश्य

3. राजनीतिक उद्देश्य

Ans. तुर्कों को भारत में इस्लामी श्रेय प्राप्त है तुर्कों के आक्रमण के समय भारत में राजनीतिक उथल-पुथल का समय था उसे समय भारत अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था जो सत्ता के लिए आपस में लड़ते झगड़ते रहते थे इससे

विदेशी आक्रमण कार्यों को भारत पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहन मिला महमूद गजनवी के प्रमुख आक्रमण इस प्रकार हैं

1**. प्रथम आक्रमण**. सितंबर **1000** इसी में महमूद ने भारत पर आक्रमण किया उसने खबर घाटी के दुर्गों पर अधिकार कर दिया तत्पश्चात वह वहां एक सैनिक अधिकारी को नियुक्त करके वापस चला गया यह आक्रमण ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण नहीं है

2. दूसरा आक्रमण. महमूद गजनवी ने **1001** में पंजाब के हिंदू शाही शासक जयपाल पर आक्रमण किया मोहम्मद के पास **15000** घुड़सवारों की सी थी उसका मुकाबला करने के लिए राजा जयपाल ने **12000** घुड़सवारों **3000** पैदल सिपाही तथा **300** हाथियों की एक विशाल सेवा का संगठन किया क्या युद्ध पेशावर में हुआ जिसमें जयपाल की पराजय हुई जयपाल अपने पुत्र पुत्रों संबंधियों अधिकारियों सहित बंदी बना दिया गया **15000** हिंदू सैनी की युद्ध में मारे गए जयपाल ने अपने आप को मुक्त करने के लिए **50** हाथी ढाई लाख डिनर देने का वचन दिया और जमानत के रूप में अपने लड़के तथा पोते को मोहम्मद के पास छोड़ लेकिन वह मालिकों द्वारा हुए इस अपमान को सहन ने कर सका और अपने बेटे आनंदपाल को राज्य सौंप कर स्वयं चिता में जल मारा

3**. तीसरा आक्रमण.** महमूद गजनवी ने **1004** ईस्वी में अपना तीसरा आक्रमण भाटिया के शासक बिजी राव पर किया विजय राव मुसलमान से बहुत नफरत करता था अतः उसने महमूद गजनवी द्वारा पंजाब में नियुक्त किए गए प्रशासन को खरीदने का अपहरण किया निसंदेह महमूद गजनवी इसे सहन करने को तैयार नहीं था अतः उसने बिजी राय पर आक्रमण कर दिया युद्ध में बिजी राय पराजित हो गया उसने आत्महत्या कर ली मोहम्मद के सैनिकों ने यहां भयंकर लूटपाट की

4. **चौथा आक्रमण. 1006** में महमूद गजनवी ने चौथा आक्रमण मुल्तान के शासन अवुल फतेह दौड़ पर किया अब्दुल फतह दौड़ मुसलमान के क्रमण थी संप्रदाय से संबंधित था कतर सुनने मुसलमान होने के कारण महमूद गजनवी को इस संप्रदाय से सख्त घृणा थी दाऊद ने बड़ी वीरता से मोहम्मद की सेवा का सामना किया किंतु अपराजिता हो गया मोहम्मद ने मुल्तान पर अधिकार कर लिया महमूद ने आनंदपाल के लड़के सुखपाल को जिसने इस्लाम ग्रहण कर लिया था तथा जिसका नाम नवासा सजा रखा गया को मुल्तान का गवर्नर नियुक्त किया

5. **पचवा अकर्मण**.सुखपाल ने इस्लाम का त्याग तो अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी मोहम्मद में सुखपाल को सबक सिखाने की उद्देश्य **1007** चीज में मुल्तान पर उन्हें आक्रमण कर दिया सुखपाल को पराजित कर दिया और बंदी बना दिया गया

6**. छठ आक्रमण 1008**. आनंदपाल ने संपूर्ण राज्य की जाति को एकत्र करके जिसमें ग्वालियर कन्नौज कालिंजर में उज्जैन के शासक को निर्मल कलेक्शन बनाया पाठक के पास होने नामक स्थान पर भयंकर युद्ध हुआ परंतु अच्छा अचानक बारूद की फट जाने के कारण आनंदपाल का हाथी युद्ध क्षेत्र से भाग गया जिस कारण राजपूत सेवा में भगदड़ मच गई मोहम्मद को यह महान विजय थी क्योंकि युद्ध में संपूर्ण भारत की शक्ति उसके द्वारा पराजित हुई

7. **सातवां आक्रमण 1009 .** नगरकोट का मंदिर उन दिनों हिंदुओं का बहुत पवित्र स्थान था और मैं हूं जानता था कि यह मंदिर वास्तव में एकत्रित धन का बैंक है सन 1009 ईस्वी में महमूद ने कांगड़ा पर आक्रमण कर दिया कुछ दिनों में हिंदुओं के विरोध कोचिंग कर दिया इस विजय के फल स्वरुप 7 लाख स्वर्ण दिनार 700 मैन सोने और चांदी के बर्तन 200 मां खाली सोना 2000 मां कच्ची चांदी और 20 मां बहुमूल्य मुसलमान के हाथ लगे कहा जाता है कि इस रूट के माल को मध्य एशिया के दूर-दूर के निवासी देखने के लिए आए थे

8**. आठवां आक्रमण 1009**. महमूद ने 1009 इसी में नारायणपुर के राजा को पराजित किया और मंदिरों को तोड़ा बहुत सी धनराशि प्राप्त की तथा यह वचन भी लिया कि भविष्य में वह भारतीय आक्रमणों में महमूद की सहायता करेगा

9. आक्रमण 1010. महमूद ने मुल्तान पर फिर से आक्रमण कर दिया क्योंकि वहां की शासन दौड़ने विद्रोह कर दिया था उसे बुरी तरह पराजित करके बंदी बना दिया

10**. दसवाआक्रमण 1013**. आनंदपाल ने मोहम्मद के लौट के बाद स्वतंत्रता की घोषणा कर दी 1030 में उसकी मौत हो गई उसका पुत्र त्रिलोचनपाल सिंहासन पर बैठा महमूद ने इसी वक्त त्रिलोचनपाल पर आक्रमण कर दिया त्रिलोचनपाल कश्मीर की ओर भाग निकला परंतु महमूद ने उसका पीछा किया उसे तो इस नदी के पास पंच के स्थान पर पराजित किया

11. **ग्यारहवा आक्रमण 1014.** 1014 में अचानक थानेश्वर के द्वार पर खड़ा हुआ कुछ नहीं है यहां के मंदिरों तहसील धनराशि लूटी लूट के भाग में 400 मिस कॉल भर का एक मूल्यवान हीरा भी हाथ लगा वह जंक्शन देवता की मूर्ति को गजनी ले गया इस तोड़फोड़ कर गजनी की गलियों में वकील दिया गया

12. **बारहवा आक्रमण 1015.** मोहम्मद गजरवी ने त्रिलोचन पाल को गिरफ्तार करने के उद्देश्य कश्मीर पर आक्रमण किया कालिंजर भागने में सफल हो गया मुहम्मद कश्मीर में लूटपाट करके वापस चला गया

13. **तेरहवा आक्रमण 1018.** 1018 में सर्वप्रथम मथुरा पर आक्रमण किया लूटपाट की अनेक मंदिरों को नष्ट कर दिया अनेक स्थान पर लोटपोट करते हुए कन्नौज पहुंचे कन्नौज का शासक राज्यपाल कहां निकला उसने बिना युद्ध किया ही मोहम्मद के चिंता स्वीकार कर ली

14. **चोदहवा आक्रमण 2019.** कन्नौज के शासक राज्यपाल द्वारा महमूद गजनवी की अधीनता स्वीकार करने से राजपूत ने घोर अपमान अनुभव किया कालिंजर के शासक गण के पुत्र विद्याधर ने इस अपमान का बदला लेने के लिए ग्वालियर के शासक अर्जुन के साथ सहयोग करके कन्नौज पर आक्रमण कर दिया इस लड़ाई में राज्यपाल मर गया इसलिए उसने 1019 में कालिंजर पर आक्रमण कर दिया जब विद्याधर ने अपनी पराजय निकट देखी तो वह रण क्षेत्र से भाग निकला राजा गण ने मोहम्मद के साथ समझौता कर लिया और उसे अतुल धन देना स्वीकार कर लिया

15. **15आक्रमण 1020.** ग्वालियर के शासक अर्जुन ने कालिंजर के शासक को मोहम्मद गजानन के विरुद्ध सहयोग दिया था महमूद गजनवी भला इसे कैसे सहन कर सकता था उसने **1020** ईस्वी में ग्वालियर पर आक्रमण कर दिया अर्जुन ने थोड़े से विरोध के पश्चात मोहम्मद के अधीनता स्वीकार कर ली

16. **सोलहवा आक्रमण 1025.** महमूद ने **1025** में सोमनाथ के मंदिर पर आक्रमण कर दिया **17** अक्टूबर **1025** को महमूद ने सोमनाथ को लूटने के उद्देश्य से **80000** योद्धाओं सहित गजनी से पूछ किया और बिना किसी कठिनाई से मुल्तान पहुंच गया तथा सोमनाथ पर आक्रमण कर दिया मंदिर के पुजारी तथा अन्य लोग चो पर चढ़ गए और कहने लगे भगवान सोमनाथ स्वम ही शत्रु को नस्ट कर देगे ईश्वरी प्रसाद का विचार है कि हिंदुओं ने मंदिर की रक्षा के लिए घमासान युद्ध किया और लगभग **50000** हिंदू मारे गए इस मंदिर से लगभग **20** लाख डिनर के हीरे जवारत और सोना प्राप्त हुआ

17. **अंतिम आक्रमण.** सोमनाथ की विजय के बाद गजनी लौटते हुए सिंह के जाटों में मोहम्मद को बहुत तंग किया था इसलिए **1026** ईस्वी में उसने बदला लेने के लिए मुल्तान पर आक्रमण किया दोनों पक्ष में घमासान युद्ध हुआ लेकिन अंत में जाटों की हार हुई और युद्ध से जाट सिंधु नदी में डूब कर मर गए उनके परिवारों को बंदी बना लिया मोहम्मद का भारत पर यह अंतिम आक्रमण था इसके **3** वर्ष बाद उसकी मृत्यु हो गई

आक्रमणों के प्रभाव.

1. पंजाब गजनी का अंग बन गया

2. भारत की दुर्बलता का प्रदर्शन

3. जन धन की हानि

4. भारत में इस्लाम धर्म का प्रचार

5. कला को धक्का

6. भारतीयों में हीनता की भावना

प्रश्न **4. मोहम्मद गोरी कौन था उसकी विजय तथा राजपूतों की पराजय के कारण क्या**

Ans.*मोहम्मद गोरी का नाम शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी था टैगोर के शासक गयासुद्दीन का भाई **1173** में गोरी ने गजनी पर विजय प्राप्त की अपने भाई को बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया इस कारण के अशुद्ध ने उसे गजनी का शासक नियुक्त कर दिया इस प्रकार मोहम्मद गोरी एक स्वतंत्र शासक बन गया उसने अपने भाई के सहायक के रूप में ही भारत पर कई बार आक्रमण किया तथा दिल्ली में सल्तनत की स्थापना का मार्ग हो सकती है

आक्रमण

1**. मुल्तान और सिंह की विजय**. **1173** इसी में उसका पहला आक्रमण मुल्तान हुआ जहां सिया संप्रदाय के कर्माई लोगों का शासन था गजनी से भारत आने के लिए उसने छोटा मार्ग मुल्तान से ही था गोरी ने ग्यारस क्षेत्र में मुल्तान की ओर प्रस्थान किया यहां उसने उच्च के हिंदू भट्टी राजा की पत्नी से वादा किया कि अगर वह अपने पति की हत्या

कर दे तो मैं तेरी पुत्री को अपनी पत्नी बना लूंगा रानी मोहम्मद गोरी के जाल में फंस गई उसने अपना पति विश देकर मार दिया

2. **गुजरात पर आक्रमण. 1178** में गोरी ने दूसरा आक्रमण गुजरात के भजन राजा भीमदेव की राजधानी उन्हेलवाड़ा पर किया उसने मोहम्मद का मुकाबला डटकर किया और उसे आबू पर्वत के निकट भयंकर पराजय दी और उसने अपने देश के बाहर खड़े दिया इस परेड से आक्रमणकारी इतना आतंकित हुआ कि आने वाले **20%** तक उसने गुजरात की तरफ मुड़कर नहीं देखा

3. **पंजाब की विजय.** पंजाब में महमूद गजनबी के प्रतिनिधि मलिक खुसरो का शासन था **1179** ईस्वी में गोरी ने पेशावर का घेरा डाला और उसे अपने अधीन कर लिया परंतु वह खुसरो की शक्ति को पूरी तरह कुचलना में सफल न हो सका **1186** में गोरी ने एक बार फिर खुसरो पर आक्रमण किया इस युद्ध में गोरी ने धोखे से खुसरो को बंदी बना लिया और उसकी हत्या करवा दी

4. **तराइन की पहली लड़ाई. 1191** में दिल्ली की ओर पूछ किया पृथ्वीराज पूजा की आक्रमण की सूचना मिली तो विशाल सी लेकर शत्रु का सामना करने के लिए पंजाब की ओर बढ़ा **14** मील दूर कराई नामक स्थान पर डायरी डालें राजपूत और मुसलमान में घमासान युद्ध हुआ गोरी ने पृथ्वीराज के भाई गोविंद राय पर हमला किया और उसके दांत उखाड़ दिए क्रोध में आकर गोविंद राय मजबूरी पर टूट पड़ा और उसने बुरी तरह लक्ष्मी कर दिया अगर उसे उसे समय एक खिलजी सैनिक ग्रंथ क्षेत्र से उठाकर न ले जाता तो संभव था कि तराइन का युद्ध गोरी के लिए कल सिद्ध होता मुसलमान चारों दिशाओं में जान बचाने के लिए भाग खड़े हुए

5. **तराइन का दूसरा युद्ध. 1192** में मोहम्मद गोरी दोबारा भारत पहुंचा **120000** सैनिक अपने साथ लायाइस बार भी मुसलमान तथा राजपूत की टक्कर तराइन में हुई राजपूत इतनी वीरता खिलाड़ी की ऐसा लगने लगा कि वह अवश्य विजई होंगे परंतु इसी समय मोहम्मद गोरी ने एक नई नीति अपनाई उसने अपनी सेवा को पांच टुकड़ियों में बांट दिया चार टुकड़िया रण क्षेत्र में जाने को आप बहाना बनाकर पहले तो पीछे भागने लगी फिर उन्होंने एकदम पलट कर शत्रु पर अचानक धावा बोल दिया राजपूत सेवा में बागड़ मच गई इसी बीच पांच टुकड़ी भी राजपूत सेवा पर टूट पड़ी परिणाम स्वरुप राजपूत पराजित हुए पृथ्वीराज को बंदी बना लिया गया और उसका वध कर दिया गया इस प्रकार दिल्ली पर मोहम्मद गौरी का अधिकार हो गया

6. **कन्नौज तथा बनारस की विजय. 1194** में मोहम्मद गोरी ने कन्नौज पर आक्रमण कर दिया छिंदवाड़ा के स्थान पर हुई लड़ाई में जयचंद के सैनिकों ने मत गोरी के सैनिकों को रखकर सामना किया मुसलमान की पराजय निकट थी कि एक तीर जयचंद की आंख में लगा और वह हाथी से गिर गया इस कारण राजपूतों में बहुजन मच गई मुसलमान ने राजपूतों का पीछा करके हजारों राजपूत की मौत के घाट उतार दिया इस प्रकार गोरी निकलना उत्तर विजय प्राप्त की इसके पश्चात गोरी ने बनारस पर अधिकार कर लिया उसने मंदिरों को नष्ट करके उनके स्थान पर मस्जिदों का निर्माण करवाया कन्नौज का बनारस की विजय मोहम्मद गोरी के लिए बड़ी महत्वपूर्ण प्रमाणित हुई

7. **कुतुबुद्दीन ऐबक की विजय.** कुतुबुद्दीन ऐबक मजबूरी का एक भिक्षा सेनापति था गोरी ने उसे **1192** अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया था उसने मेरठ पूर्ण तथा वर्णन के क्षेत्र को शीघ्र ही अपने अधीन कर लिया उसने **1193** में दिल्ली तथा **1195** अजमेर पर अधिकार कर लिया **1197** गुजरात के शासक भीमदेव को पराजित करके गौरी की पराजय का पत्र लिया **1202** और **3** में उसने राजपूत के प्रसिद्ध कालिंजर पर अधिकार कर दिया

8. **बख्तियार खिलजी की विजय. 1197** बिहार की राजधानी उधमपुरी पर आक्रमण किया उसे समय बिहार में पाल वंश के राजा इंद्र वर्मन का शासन था उसकी बौद्ध धर्म निष्ठा थी इसलिए उसने बख्तियार खिलजी के आक्रमण का कोई विरोध नहीं किया खिलजी ने भारी संख्या में बहुत वर्षों की हत्याएं कर दी तथा उनके परिवार नष्ट कर दिए **12045** ईस्वी में उसने बंगाल पर आक्रमण कर दिया वहां के राजा लक्ष्मण सिंह ने बिना किसी विरोध की आत्मसमर्पण कर दिया यहां भी बख्तियार खिलजी ने भारी रूप पाठ की

9. **मोहम्मद गौरी की मृत्यु. 1205** में मोहम्मद गोरी हरिजन के साथ से पराजित हो गया था गोरी की इस पराजय से उत्साहित होकर पंजाब के खोखरों ने जो की एक युद्ध प्रिया कविराज जाती थी निवेद्रों का झंडा बुलंद कर दिया मोहम्मद गोरी ने कुतुबुद्दीन ऐबक के सहयोग से विद्रोह का दमन किया तथा बड़ी संख्या में पोकरण की मौत के घाट उतार दिया गजनी लौटते समय मोहम्मद गोरी धनियक नामक स्थान पर ठहर यहां **15** मार्च **12** से को कुछ खोखरों ने मोहम्मद गौरी की हत्या कर दी

मुसलमान के विरुद्ध राजपूत की पराजय के कारण

1. राजनीतिक एकता की कमी .

2. सेवा का अभाव.

3. राजपूतों की सामंत प्रथा .

4. राजपूत शासको में दूरदर्शिता का अभाव.

5. मुसलमान का कुशल सैनिक संगठन

6. राजपूत को शत्रु की गतिविधियों की जानकारी नहीं होना.

7. राजपूतों के घातक उच्च आदर्श.

8. तुर्कों के श्रेष्ठ अस्त्र-शास्त्र.

9. मुस्लिम घुड़सवार

10. हिंदुओं में जातीय भेदभाव.

11. मुसलमान की धर्मांधता.

12. मुसलमान के विश्वसनीय दास.

प्रश्न 5. मुगल शासन व्यवस्था पर एक निबंध लिखिए

Ans . मुगल शासन अत्यधिक केंद्रीकृत नौकरशाही पर आधारित था मुगल सम्राट बाबर एवं वायु को प्रचलित व्यवस्था में परिवर्तन करने का समय ही नहीं मिला अकबर ने मुगल प्रशासनिक व्यवस्था को निश्चित रूप प्रदान किया सौभाग्य से अकबर को विरासत में अफगान शासक शीर्षक द्वारा स्थापित नौकरशाही पर आधारित केंद्रीकृत शासन व्यवस्था प्राप्त हुई अकबर ने इस व्यवस्था में कुछ मौलिक परिवर्तन करके इसे अत्यधिक परिष्कृत बना दिया अकबर द्वारा स्थापित शासन व्यवस्था कुछ परिवर्तनों के साथ औरंगजेब के समय तक मुगलों के शासन का आधार बनी रही

केंद्रीय शासन

1. **सम्राट.** मुगल सम्राट केंद्रीय प्रशासन का केंद्र बिंदु था वह राज्य का संवैधानिक तथा व्यवहारिक मुखिया था उसे सभी प्रकार के अधिकार प्राप्त थे वह राज का अंतिम का निर्माता प्रशासक व्यवस्थापक अंतिम न्यायालय और सेनापति था उसकी शक्ति पर कोई प्रतिबंध नहीं था इस प्रकार मुगल सम्राट का पद पहुंचा निरंकुश एवं शिक्षाचारी था परंतु मुगल बादशाहों ने कभी शिष्यचारिता एवं अत्याचार का परिचय नहीं दिया प्रजा की भलाई करना वे अपना कर्तव्य समझते थे अकबर का विचार था कि राजा को न्याय प्रिय निष्पक्ष उदार परिश्रमी प्रजा का संरक्षक एवं शुभचिंतक होना चाहिए

मंत्री परिषद

1. **प्रधानमंत्री,** वजीर ,दीवान ,वकील एवं मतलब. सम्राट के बाद सबसे ऊंचा पद प्रधानमंत्री का होता था जो वकील भी कहलाता था प्रधानमंत्री बादशाह के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता था अकबर के समय में यह पद बैरम खान के पास था वकील को राज्य के उच्चतम स्थल के अधिकारियों की नियुक्ति एवं हटाने का अधिकार था उसका राजस्व एवं सैनिक विभाग पर भी नियंत्रण था अबुल फजल ने दीवान को आए और वह विवाह का मुखिया बताया जैसा ही खजाने का प्रबंधन होता था सभी खातों की जांच करता था वह केंद्र एवं राज्यों के बीच कड़ी का काम करता था

2. **मीर बक्शी.** सैनिक विभाग का अध्यक्ष आमिर बक्शी कहलाता था सैनिकों की भर्ती करना उनकी खुलियां रखना घोड़ा एवं हाथियों पर दाग लगाना सैनिकों के अस्त्र शस्त्रों घोड़ा शिक्षा एवं रसद का प्रबंध करना अमीर बक्शी का प्रमुख कार्य था सभी मानसबदारों की व्यक्ति इस के द्वारा की जाती थी वह गुप्तचर विभाग का मुखिया होता था अलग-अलग प्रति से वाक्य निवासी द्वारा भेजी गई सारी सूचनाओं बादशाह के सामने पेश करता था

3. **खान ए सामा.** इसका मुख्य कार्य साम्राज्य एवं राजकीय परिवार से संबंधित सदस्यों की जरूरत की पूर्ति एवं देखरेख करना था वह सही भोजन भंडार खजाना उपहार एवं नजरान आदि की देखभाल करता था

4. **शदर उसे सुदूर.** यह धार्मिक मामलों में बादशाह का सलाहकार था उसे न्याय विभाग का ही प्रधान कहा जाता था धनीपुर की व्यवस्था करने धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था करना विद्वानों एवं साधु संतों के लिए राष्ट्रीय अनुदान की व्यवस्था करना तथा इस्लाम के कानून के पालन की देखभाल करना इसके प्रमुख कर्तव्य थे

5. **काज़ी अल कुजात.** सम्राट के बाद न्याय का प्रमुख काशी होता था वह सम्राट के प्रधान न्यायाधीश होता था कि मुस्लिम कानून के अनुसार ही मुकदमा का फैसला करता था कई की सहायता के लिए मुक्ति होते थे जो कानून की

व्याख्या करते थे जिसके आधार पर कई निर्णय देता था फ्रांस जिला नगरों के खिलाड़ियों की नियुक्ति करना तथा उनके कार्यों की देखभाल करना भी कई का कार्य था

6. **महुतसीव.** जनता के नैतिक चरित्र की देखभाल करने वाले भाग का अध्यक्ष कहलाता था परंतु व्यावहारिक दृष्टि से इसका कार्य क्षेत्र मुसलमान तक की सीमित था इसका मुख्य कार्य यह देखना था कि जनता इस्लाम के कानून के अनुसार जीवन यापन कर रही है अथवा नहीं मादक द्रव्यों के प्रयोग जुआ खेलने से रोकना स्त्री पुरुषों के अनैतिक संबंधों को रोकना भी इसका कार्य था कभी-कभी इन्हें बाजारों में वस्तुओं का मूल्य निर्धारण करने तथा नापतोल के पैमानों की जांच करने का कार्य भी दिया जाता था औरंगजेब के शासनकाल में इस पदाधिकारी का महत्व काफी बढ़ गया था

7. **मीर आतिश.** तूफानी वाका अध्यक्ष मीरा राकेश कहलाता था इस दरोगा यह तो खाना भी कहा जाता था यदि मूल रूप से यह है अमीर बक्शी का सहायक होता था परंतु तो खाने के बढ़ते महत्व के कारण उसे मंत्री पद का गौरव प्राप्त हो गया था तोपों को बनवाना उन्हें क्लॉक में लगवाना बंदूकन का निर्माण करवाना अधिकारी अमीर आतिश के प्रभाव के क्षेत्र में आते थे

8. **दरोगा ए डक चौकी.** मुगल शासन के अंतिम दिनों में सूचना एवं डाक विभाग का महत्व काफी बढ़ गया था **28** के लिए अलग से विभाग का गठन किया गया था इसके अधिकार में समाचार लेखन उपचार एवं संवाद वाहक होते थे यह सारे साम्राज्य में नियुक्त किए जाते थे इन सबसे प्राप्त गुप्त सूचनाओं को भाषा तक पहुंचाया ना इस विभाग का कार्य था यह विभाग राजकीय पत्रों को भी भिजवाता था

प्रांतीय शासन व्यवस्था. मुगलों का प्रांतीय शासन केंद्रीय प्रशासन से मिलता जुलता था सर जगनाथ सरकार ने लिखा है कि मुगल सुबह में शासन व्यवस्था केंद्रीय शासन व्यवस्था का लघु रूप था प्रत्येक सुबह में सूबेदार से पैसा लड़ दीवान बक्शी काशी क्षेत्र और आधिकारिक होते थे

1. **सूबेदार**

2. दीवान.

3. बक्शी

4. वाक्य नवीश.

5. सदर.

6. कोतवाल.

7. मीर बहर

स्थानीय शासन.

सरकार तथा जिले का शासन . सरकार का शासन नियम अधिकारियों द्वारा चलाया जाता था

1. **फौजदार**

2. अमल गुर्जर

3. बीतकच

4. खजनदार

5. कोतवाल.

परागने का शासन

1. **सिकदगांव का शासन. मुगलार**

2. अमिल .

3. पोतदार.

4. कानूनगो.

5. कारकून.

मुगल काल में गांव शासन की सबसे छोटी इकाई थी मुगल शासको ने गांव को एक स्वायत्त संस्था माना तथा उन्होंने गांव की परंपरागत व्यवस्था में कोई हस्तक्षेप नहीं किया उन्होंने गांव को समृद्धि देने के लिए इन्हें प्रशासनिक तंत्र में शामिल कर लिया गांव का प्रशासन पंचायत चलती थी तथा गांव की सुरक्षा सफाई शिक्षा सिंचाई चरित्र निर्माण एवं धार्मिक कार्यों का संपादन का पंचायत ही करती थी गांव के अधिकांश झगड़ों का निपटारा भी पंचायत ही करती थी गांव के प्रशासन से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण पदों का विवरण इस प्रकार से है

1. **ग्राम प्रधान मुकदम चौधरी पटेल.**

2. पटवारी

3. महाजन

प्रश्न 6. **मुगल साम्राज्य के पतन संबंधी सिद्धांतों का परिचय दीजिए।**

Ans. बाबर से लेकर औरंगजेब का काल मुगल साम्राज्य के उत्थान एवं विकास का कल था परंतु **1707** इसी में औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही मुगल साम्राज्य की शक्ति एवं प्रतिष्ठा में कमी आने लगी मुगल दरबार संघर्षों दुर्घटनाओं को चक्र षडयंत्रों एवं राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का अखाड़ा बन गया औरंगजेब के बाद के मुगल सम्राटों पर अमीर वर्ग का नियंत्रित करने लगा केंद्रीय शासन की कमजोरी की वजह से साम्राज्य की राजनीतिक सीमाएं कम होने लगी अनेक प्रांत स्वतंत्र होने लगे तथा पूरी प्रशासनिक व्यवस्था कर मर गई **1739** में नादिरशाह का आक्रमण इस पुराने जर्जर होते मुगल ढांचे के लिए अत्यधिक हानिकारक साबित हुआ तथा इसने साम्राज्य के पतन के क्रम को बहुत तेज कर दिया इस प्रकार **150** वर्षों तक मुगल साम्राज्य एक बीमार तथा कमजोर व्यक्ति की भाती कूट-कूट कर समाप्त हो गया इसके पतन के मुख्य कारण इस प्रकार से हैं

1. **जागीरदार संकट**

2. कृषि व्यवस्था का संकट

3. केंद्र व क्षेत्रीय संबंधों में तनाव

4. स्वेच्छा चारी एवं निरंकुश शासन पद्धति.

5. उत्तराधिकार के नियम का अभाव.

6. मुगल अमीरों एवं सरदारों का चरित्रहीन होना.

7. अमीरों के षड्यंत्र एवं दाल बंदी.

8. मुगल साम्राज्य का आर्थिक दिवालियापन.

9 मुगल साम्राज्य की विशालता एवं मैराटा का उत्कर्ष.

10. जनसंपर्क का अभाव.

11. जल सेवा की उपेक्षा .

12. संदेशहिल स्वभाव.

13 औरंगजेब के दुर्बल तथा आयोग का उत्तराधिकारी.

14. यूरोपीय शक्तियों का आगमन.

15. औरंगजेब की राजपूत नीति.

16. औरंगजेब Ans मन सब धारी**की धार्मिक नीति.**

17. औरंगजेब का शकी स्वभाव.

18. अहमद शाह अब्दाली का आक्रमण.

19. यूरोपीय शक्तियों का आगमन

20. राष्ट्रीयता की भावना का अभाव.

प्रश्न7.**मनसबदारी व्यवस्था क्या है इसकी विशेषताएं और गुण और दोष बताएं।**

Ans. मुगलकालीन प्रशासनिक संस्था थी मन सब शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम अकबर काली ऐतिहासिक लेख में देखने को मिलता है साधारण शब्दों में कहा जा सकता है कि मनसबदारी प्रथा संपूर्ण मुगल काल में सैनिक तथा नागरिक सेवा का प्रमुख आधार थी

मनसबदारी प्रथा का उद्भव. भारत में मुगल सामराज्य की स्थापना एवं स्थिरता का आधार मुगलों की सेना थी सम्राट को कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए अमीरों की सैनिक के ऊपर निर्भर रहना पड़ता था तथा अमीरों को दिए जाने वाले वेतन तथा सैनिकों की संख्या के बीच कोई तालमेल नहीं था इस प्रकार शासक की स्थिति अत्यंत डावाडोल थी अकबर ने शीघ्र यह अनुभव किया कि एक सशक्त तथा शुभव्यवस्थित केंद्रीय व्यवस्था की अपना के

लिए एक ऐसी प्रशासनिक व्यवस्था की आवश्यकता है जिसमें अमीर वर्ग को अपनी अधीनस्थ शासन के प्रति उसकी उत्तरदायित्व का बोध हो

मनसब शब्द का अर्थ. मन सफर भी भाषा का शब्द हे जिसका अब होता है पद अथवा स्थान मन सब किसी भी व्यक्ति का प्रशासन में दर्जा वेतन दरबार में उसका स्थान तथा उसकी घुड़सवार हाथीयो एवं छकड़ों की संख्या निचित करता था मन सबसे किसी व्यक्ति या अमीर की मुगल प्रशासन सेवा में स्थिति का बोध होता था

मनसबदारो की नियुक्ति पदोन्नति एवं पद्मावती. यह सभी अधिकार सम्राट के पास थी नौकरी के लिए इच्छुक व्यक्तियों को मीर बगची सम्राट के सामने पेश करता था इसकी अतिरिक्त प्रांतों की गवर्नर तथा सैनिक अभियानों के नेता तथा शाही परिवार के शहजादी भी सम्राट के सामने नौकरी के इच्छुक व्यक्ति की सिफारिश करते थे तथा सम्राट इन्हें मनसब प्रधान करता था मनसब प्राप्त करने वाले व्यक्ति को जमानत देनी पड़ती थी तथा यह नियम कठोरता से लागू किया जाता था मनूची ने लिखा है कि बिना जमानत की मनसब नहीं मिलते थे मनसबदारों पदोन्नति का आधार सम्राट की इच्छा थी तथा निरीक्षण के समय जब कोई मनसबदार अपने सैनिकों एवं घोड़ों से सम्राट को प्रभावित कर देता था तो उसका पद बड़ा दिया जाता था पदोन्नति के लिए सैनिक सेवा में वीरता एवं योगिता का विशेष महत्त्व था उत्तम उपहार तथा पेशकश प्रस्तुत करने वाली अमीरों की भी पदोन्नति की जाती थी इसके अतिरिक्त शुभ अवसर जैसी सम्राट के राजा अभिषेक की वर्षगांठ सम्राट राजकुमारो के जन्मदिन वर्ष की प्रथम दिन सैनिक अभियानों के आरंभ तथा अंत अच्छा कभी-कभी नई मन सरदारों की मनसब की वृद्धि की जाती थी

मनसब दारों की श्रेणीयां. सबसे छोटा मनसब **10** तथा सबसे बडा मनसब **12,000** था अकबर के समय में **5000** हजार से ऊपर का मनसब केवल राजकुमारो तथा सम्राट संबंधी को दिया जाता था जब सबसे बडा मन सब **12,000** का हो गया था आईने अकबरी में अबूल फजल ने **66** मनसब का उल्लेख किया है परंतु व्यवहार में **33** मनसब ही प्रधान किए जाते थे विद्वानों की मानता है कि मनसबदारों की संख्या **33** ही थी

जात और सवार. मनसबदारी व्यवस्था में भ्रष्टाचार एवं घोड़ों संबंधी धोखाधड़ी को रोकने के लिए अकबर ने अपने शासन के अंतिम वर्षों में मनसबदारी व्यवस्था में जात ओर सवार के दो पदों को आरंभ किया प्रत्येक मनसबदार को जात एवं सवार दो पद दिए गए इन पदों के बारे में विद्वानों में मतभेद है डॉ अहतर अली के अनुसार जात पद मनसबदार के वेतन तथा दरबार में उसकी स्थान का परिचायक था जब की सवार पद उसके द्वारा रखें जाने वाले घोड़ों तथा घुड़सवार की संख्या का प्रतीक था

मनसबदारों के वेतन. यह वेतन नगद अथवा जागीर की भू राजस्व के रूप में राज्य द्वारा प्रदान किया जाता था जब वेतन जागीर की रुपए दिए जाता था तो मन सब दारु का जागीर से राजस्व की वसूली का अधिकार नहीं था सरकारी कर्मचारी संबंधित जागीर से राजस्व वसूल कर के वेतन की बराबरी की राजस्व का उसे भुगतान कर देते थे

मनसब दारो पर प्रतिबंध. मनसबदारो को शक्तिशाली होने से रोकने के लिए मुगलों ने उन पर अनेक प्रतिबंध लगा रखे थे बड़े बड़े मनसबदारों को एक स्थान पर ज्यादा दिन तक नहीं रहने दिया जाता था उनका तबादला कर दीया जाता था इसी प्रकार मन सरदारों को वेतन के रूप में मिलने वाली जागीर को भी लगातार बदला जाता था मन सरदारों को अपनी जागीर की किसानों से निर्धारित कर से अधिक कर वसूल करने का अधिकार भी नहीं था मन सरदारों के पद अनुवांशिक भी नहीं थे तथा उनकी मृत्यु के पश्चात उनकीकी संपत्ति पर राज्य का अधिकार हो जाता था समय समय पर मनसबदारों द्वारा रखें जाने वाली सैनिकों घोड़ों एवं साजो सामान का निरीक्षण किया जाता था मनसबदारों द्वारा रखें जाने वाले सैनिकों का हूलिया दर्जे किया जाता था तथा उनके घोड़ों तथा हाथियों को दागा प्रत्येक पशु पर ही निशान तथा एक मनसबदार का निशान लगाए जाता था ताकि निरीक्षण के समय मनसबदार आपस में पशु ने बदल सके खुफिया विभाग भी मनसबदारों की गतिविधियों पर नजर रखता था

मन सब धारी व्यवस्था के गुण. अकबर द्वारा स्थापित मन सरदारी व्यवस्था में अनेक अच्छी बातें थी.

1. मसाबदारी व्यवस्था से मुगल सम्राट उनको एक विशाल सेना प्राप्त हो सकी जिसके कारण मुगल सामराज्य का विस्तार हो सका

2. इस व्यवस्था से शांति व्यवस्था स्थापित हो सकी

3. इस व्यवस्था ने जागीरदार प्रथा के अनेक दोषों को दूर करके प्रशासन को सुरक्षित करने में मदद की

4. मसनदारो के अच्छे वेतन ने विदेशों से अनेक योग्य व्यक्तियो को मुगल सेवा में आने के लिए आकर्षित किया

5. सम्राट की स्वामीभक्ति और कर्तव्यनिष्ठा कि भावना भी बढी

मंनसबदारी प्रणाली के दोस्.

1 मनसबदारी निश्चित सेना न रखना तथा धन का दुरुपयोग करना व्यवस्था का सबसे बड़ा दोस्त था

2. मनसबदार अपने सैनिकों की भर्ती स्वम करते थे तथा वेतन देमे के कारण सैनिकों के निष्ठा सम्राट से न होकर मनसबदरो के प्रति होति थी ऐसे सेना लंबे समय तक मुगल सामराज्य को स्थित प्रदान नहीं कर सकती थी

,3. मनसबदरी प्रणाली के कारण मुगल सैनिक का राष्ट्रीयकरण नहीं वो सका इस व्यवस्था में विभिन्न मनसबदर अपने अपने ढंग से सैनिकों को प्रशिक्षित करते थे विभिन्न जाति राजपूतों अफगानों मगोलों के सैनिक प्रशिक्षण के अलग-अलग तरीके से अतः इस प्रकार की सेना में राष्ट्रीय भावना उत्पन्न नहीं हो सकती थी

4. मनसबदरी प्रथा ने अमीरों एवं सरदारों को विलासी बना दिया इस व्यवस्था में उसकी मृत्यु के बाद उसका मनसब समाप्त हो जाता था तथा सरकार उसकी संपत्ति जप्त कर लेती इस कारण मनसबदार अपने जीवनकाल में ही सारा धन को समाप्त कर देना चाहता था जिससे वे विलासी हो गया

प्रश्न **8. मुगल शासन की अंतर्गत औद्योगिक विकास पर प्रकाश डालिए अथवा**

मुगलकालीन कृषि तथा उद्योग की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए

Ans. 1526 ई से **1857** ई तक का समय भारतीय इतिहास में मुगल काल के नाम से जाना जाता है मुगल शासक ने एक तरफ जहां अधिकांश भारत पर अपनी विजय पताका पहरी दूसरी तरफ उन्होंने एक केंद्रीकृत शासन व्यवस्था की नींव डालकर राजनीतिक स्थिरता सुदृढ़ कायम की इस शांति एवं मित्रता के एक वातावरण में भारतीय कृषि उद्योग व्यापार एवं वाणिज्य का अभूतपूर्व विकास हुआ मुगल शासको ने सल्तनत कालीन राजनीतिक एवं आर्थिक संस्थानों को समय अनुसार परिवर्तन करके भारतीय अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा प्रदान की

कृषि.

मुगल काल में भारतीय कृषि की मुख्य विशेषताएं. मुगल काल में भारतीय कृषि की अवस्था सल्तनत काल की तुलना में काफी उन्नत थी तथा मुगल शासको द्वारा कृषि की अवस्था को सुधारने के लिए काफी प्रयास किए गए मुगल शासको द्वारा किसानों की सुरक्षा तथा सुविधाओं का पूर्ण ध्यान रखा जाता था मुगल शासक भू राजस्व अधिकारियों तथा कर्मचारियों को फरमान जारी करते थे कि वह किसानों के हितों की रक्षा करें तथा उन्हें आवश्यकता अनुसार कृषि यंत्र तथा बीज खरीदने के लिए तकबी कर्ज उपलब्ध करवाने की व्यवस्था करें मुगलकालीन कृषि की निम्नलिखित विशेषताएं थी

1. **कृषि योग्य भूमि का विस्तार.** इस कल के दौरान कृषि योग्य भूमि का काफी विस्तार हुआ बिहार अवध बंगाल की कुछ जंगलों को साफ किया गया उसे कृषि योग्य भूमि बनाया गया कुछ भागों में पंजाब तथा सिंह के अनेक भागों में इस दौरान सिंचाई व्यवस्था की विकसित हो जाने से कृषि योग्य भूमि बढ़ी।

2. **कृषि तकनीक या खेती के साधन व तरीके.** मुगल काल में कृषि करने के ढंग परंपरागत थे फिर भी मिट्टी की प्रकृति और फसलों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए भारतीय किसान कई प्रकार के औजार एवं तकनीक का सहारा लिया करते थे जैसा कि ऊपर हमने वर्ष की मुगल काल में कृषि योग भूमि का विस्तार हुआ जो निश्चित रूप से इस काल में उच्च तकनीकी विकास का प्रतीक है

3. **कृषि उत्पादन.** उत्तरी भारत में मुकता दो फैसले खरीफ और रवि उगाई जाती थी खरीफ की प्रमुख फसल ध्यान या चावल थी जबकि रवि की फसल गेहूं थी दक्षिण भारत में उत्तर भारत की तरह का मौसमी विभाजन नहीं था तथा यहां वर्ष में दो बार चावल की खेती हो जाती थी मैदानी भागों में जो खूब पैदा होता था इस कल की नगदी फसलों में गाना कपास नील तंबाकू अफीम केसर आदि प्रमुख हैं इसके अतिरिक्त मुल्तान मालवा सिंह खानदेश बारात में भी गाना अप जाया जाता था कपास यज्ञ पूरे भारत में उगाई जाती थी परंतु आज की महाराष्ट्र गुजरात बंगाल में उच्च कोटि की कपास का उत्पादन होता था

4. **कृषि में पशुओं का प्रयोग.** भारत में प्राचीन काल से ही कृषि कार्यों में पशुओं का प्रयोग किया जाता रहा है मुगल काल में भी कृषि उत्पादन में पशुओं की एक महत्वपूर्ण भूमिका थी मुगल काल में कृषि क्षेत्र में विस्तार के तथ्य को

ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि उसे समय पशुओं की संख्या प्रति घर के हिसाब से वर्तमान से कहीं अधिक रही होगी जोतना एवं सिंचाई करने एवं फसल को होने में पशुओं की सहायता ली जाती थी वहीं दूसरी तरफ पशुओं के गोबर का खाद के रूप में उपयोग होता था दूध दही घी भी प्रचुर मात्रा में पशुओं से प्राप्त होता था
मुगल काल में हाल एवं बैलों से खेती की जाती थी हर लकड़ी का बना होता था जिसमें लोहे का फल लगा होता था
भूमि की उर्वरता बढ़ाने के लिए फसलों को अदल-बदल कर होने का प्रयोग भी किया जाता था
फसल काटने के लिए अर्थ वृताकार हंसी का प्रयोग किया जाता था

5.**सिंचाई के साधन .** मुगल काल में कृषि भूमि की सिंचाई के क्षेत्र में तकनीकी विकास हुआ सिंचाई कृत्रिम साधनों में खून तालाबों बावड़ियों उन्नाव का उपयोग किया जाता था उत्तर भारत में कच्चे में पक्के दोनों प्रकार की कुएं खोदे जाते थे कूओ से पानी खींचने के लिए अनेक तरीके अपनाए जाते थे कुएं से पानी निकालने का सबसे आसान तरीका राशि एवं बाल्टी के सारे हाथों से पानी निकालने का था परंतु इसका उपयोग बड़े खेतों की सिंचाई के लिए नहीं होता रस्सी एवं दुरी की सहायता से बैलों का प्रयोग करके पानी निकाला जाता था पशु शक्ति के उपयोग से बड़े क्षेत्र में सिंचाई संभव हो सकती है

6. **उद्योग.** वस्त्र, सूती कपड़े,रेशमी वस्त्र, ऊनी कपड़े नील, चीनी, तेल, तम्बाकू, ओर अफीम उद्योग थे।

7.**गैर कृषि उद्योग.** कास्ट, चर्म, कागज, ईट पत्थर, मिट्टी, के बर्तन, इत्र, लाख, हाथी दांत, सोरा, नमक, सोना,चांदी, लोहा, हीरे आदि के उद्योग थे।

प्रश्न 9. **मुगलों के अधीन ग्रामीण समुदाय पर टिप्पणी लिखिए**

Ans. भारत सदैव से ही कृषि प्रधान देश रहा है नगरों के विकास में तत्कालीन स्थिति में काफी सहयोग किया था गांव की उपज का उपयोग नगरों में रहने वाले लोग करते थे परंतु गांव के बिना उन्नति नहीं कर सकते थे इसलिए यहां मध्यवर्गीय शहरी तथा ग्रामीण समाज का एक साथ ही अध्ययन करेंगे

ग्रामीण समाज. प्रत्येक गांव में कुछ झोपड़ियां एक कुआं एक तालाब और थोड़ी जगह बगीचे के लिए होती थी कौटिल्य के अनुसार किसी गांव में **100** परिवार से कम या **500** परिवार से अधिक नहीं होनी चाहिए तथा उसकी एक प्राकृतिक सीमा पेड़ों नदियों पहाड़ियों और झाड़ियां से गिरी हुई होनी चाहिए गांव में आई का मुख्य साधन खेत था राजा हर्ष के बाद यह पद्धति रही की भूमि सैनिक तथा प्रशासनिक अधिकारियों को दी जाने लगी इन जागीरदारों की अधिकतर असीमित थे वे खेती हर मजदूर सदस्यों से बेकार लेते थे प्राचीन काल में किसानों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की स्वतंत्रता रहती थी जबकि यूरोप में ठीक इसके विपरीत स्थिति थी वहां जमीन के भू स्वामी खेती हर मजदूर की खेतों में काम करने के लिए विवश करते थे

1. **धार्मिक वर्ग.** भारत के गांव में हिंदू तथा मुसलमान दोनों ही निवास करते थे इसमें हिंदुओं की संख्या प्रत्येक गांव में लगभग ज्यादा होती थी गांव में हिंदुओं की कुल संख्या लगभग **95%** तक थी हिंदू ग्रामीण समाज विभिन्न वर्गों जातियों में विभाजित था अधिकतर हिंदू ग्रामीण कृषि कार्य में लगे रहते थे शहरों में तो उनको मुस्लिम उच्च वर्ग

द्वारा चुनौती पेश की जाने लगी थी भूमि पर भी ब्राह्मणों का भी वर्चस्व आया था शासन की सहायक क्रियाएं भी उनके द्वारा ही संचालित होती थी भू राजस्व जैसे आई के साधनों पर भी उनका आधिपत्य स्थापित था अकबर के समय में गांव में हिंदुओं की स्थिति में कुछ सुधार हुआ प्रशासन में उसके समय में हिंदुओं को भी महत्वपूर्ण स्थान पर नियुक्त किया जाने लगा उसके समय अपमानित जजिया कर को भी समाप्त कर दिया गया हिंदू तथा मुसलमान दोनों ही स्वतंत्रता पूर्वक जीवन व्यतीत करते थे परंतु औरंगजेब के समय अकबर कालीन नीतियों को पूर्णतया बदल दिया गया शासन ने एक-एक बार फिर से ग्रामीण हिंदू समुदाय के साथ गणित नीति को अपनाना आरंभ कर दिया

2. **किसान.** गांव में सबसे ज्यादा संख्या किसने की थी गांव में रहने वाले किसान विप या खुद कस के रूप में विभाजित थे कुछ लोगों को गोस्वामी भी कृषि में सहायक साधन उपलब्ध करवाते थे इनको बेल्हाल तथा बी जमींदारों द्वारा ही उपलब्ध करवाए जाते थे इन गरीब व्यक्तियों का शोषण भू स्वामी सरकारी कर्मचारी व्यापारी और जागीरदार करते थे व्यापारियों का बाहरी गरीबों के प्रति कमल तथा परंतु वास्तव में भी उनकी सारी संपत्ति छीन लेना चाहते थे

आजीविका. बाबर ने किसानों के दाहिने दिशा का वर्णन करते हुए लंगोटी और खिचड़ी शब्दों का प्रयोग किया इसका प्रयोग गांव के लोग करते थे गांव के लोग उनका गरीब बनाने की नीतियां अलाउद्दीन खिलजी ने शुरू की और बाद के मुस्लिम शासको ने इसकी अपनाया देश में डाल है गेहूं बाजरा जो चावल मटर गाना तेल के बीज और कई प्रमुख फैसले थी दिल्ली के सम्राट अच्छे फलों की पैदावार बढ़ाने में काफी रुचि लेते थे गांव के लोग सिर्फ खेती पर ही आश्रित नहीं थे कि कृषि के साथ-साथ छोटे-मोटे उद्योग धंधे में भी लगे रहते थे इन कुशल कारीगरों को सामाजिक प्रतिबंधों और सरकारी कर्मचारियों के अत्याचारों का सामना भी करना पड़ता था गांव की अधिकतर उद्योगों में सुगंधित वस्तुएं बोर्ड मदिरा अत्याधिकारी का निर्माण किया जाता थाकुछ लोग टोकरी रस्सी मिट्टी के बर्तन का चमड़े से वस्तु बनाने का भी काम करते थे

3. **ग्रामीण कृषक** का स्वरूप. एक गांव में किस एक ही जाति के होते थे यदि पी किसने में अनेक जातियों के लोगों होते थे एक गांव में एक ही भाग जाने के लोग रहते थे जिससे उनका संगठन बहुत मजबूत था खेतों पर सामूहिक रूप से किसी वर्ग विशेष का अधिकार नहीं था किस का अधिकार केवल व्यक्तिगत था गांव का सरदार उत्तर भारत में मुकदम तथा दक्षिण भारत में पटेल के नाम से जाना जाता था किसी-किसी गांव में एक से अधिक सरकार होते थे लेकिन जब पदों का क्रय विक्रय होने लगा तो एक नगर का रहने वाला भी गांव का सरदार हो सकता था उसे सरकारी अधिकारी नहीं कहा जा जमीदार. मुगलसकता था सरदार ग्राम पर अपना अधिकार जताने लगा और गोस्वामी के सदस्य अपने अधिकारों का प्रयोग करने लगा गांव में पटवारी होता था जो गांव की जमीन तथा लगन संबंधी हिसाब रखता था

4.**जमीदार**.काल में जमींदारी का दिन मुखिया होता था मुगल साम्राज्य में हर एक स्थान पर जमींदार थे जिम्मेदार केंद्र द्वारा शासित प्रदेश में भी होते थे जमीदार का शाब्दिक अर्थ है भूमि पर अधिकार रखने वाला चौधरी साड़ी में बनी और ऑफिस में जमींदार शब्द का प्रयोग अपने उल्लेख में किया है

प्रश्न 10. **भक्ति आंदोलन पर एक निबंध लिखिए।**

Ans. मध्यकालीन भारत में भक्ति तथा सुख की नमक महत्वपूर्ण धार्मिक आंदोलन का उदय हुआ सूफी आंदोलन इस्लाम धर्म से उत्पन्न हुआ था तथा इसकी उत्पत्ति का मूल कारण इस्लामी राष्ट्रवाद था सल्तनत युग में भारत में इस्लाम के प्रचार के साथ ही एक नई सभ्यता का आगमन हुआ इस सभ्यता में कुछ विद्वानों ने भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को प्रभावित किया सल्तनत की स्थापना के साथ ही बाहरी मुस्लिम देशों से बड़ी संख्या में सूफी भारत में आए तथा वह यहां विभिन्न भागों में बस गए सुखी मत के लोग हिंदू विचारधारा विश्वासों और रीति रिवाज से बहुत प्रभावित हुए तथा उन्होंने बहुत सी हिंदू रीति रिवाजें प्रथाएं अपना दे

भक्ति आंदोलन. मध्ययुग में भारत के विभिन्न भागों में एक आंदोलन चला इस आंदोलन का उद्देश्य हिंदू धर्म में सुधार करना तथा सामाजिक कुरीतियों का अंत करना था इतिहास में इस आंदोलन को भक्ति आंदोलन के नाम से जाना जाता है सभी सुधारो ने भक्ति का मार्ग अपनाया भक्ति क्या है इस बारे में गीता तथा अन्य भारतीय ग्रंथ काफी प्रकार डालते हैं परंतु मध्य युग में भक्ति के सिद्धांत का विधिवत प्रचार हुआ इस आंदोलन की विशेषता यह थी कि यह समस्त भारत में एक साथ में चलाटी से लेकर **16**वीं शताब्दी तक इस आंदोलन का भारतीय विभिन्न भागों में प्रचार कर चला रहा दक्षिण भारत में आंदोलन का आरंभ हुआ धीरे-धीरे उसने बंगाल उत्तर प्रदेश राजस्थान पंजाब आदि को भी प्रभावित किया इसके विपरीत संत लहर के प्रचारक अवतारवाद में विश्वास नहीं करते थे वह एक ही ईश्वर में विश्वास करते थे जो निराकार हैं इस लहर के प्रमुख प्रचारक भक्त कबीर श्री गुरु नानक देव जी नामदेव जी रविदास इत्यादि थे उन संतों ने जीवन के अंधविश्वासों का कड़ा विरोध किया तथा जीवन पथ को एक नई दिशा प्रदान की

भक्ति आंदोलन की उत्पत्ति के कारण.

1. हिंदू धर्म के दोष.

2. इस्लाम धर्म का खतरा

3. महान सुधारकों का जन्म.

4. सूफी मत का प्रभाव.

5. मुसलमान का यहां बस जाना.

6. आश्रय की खोज.

भक्ति आंदोलन की प्रमुख विशेषताएं.

1. ईश्वर का महत्व.

2. गुरु की महिमा.

3. जाति पाति में अविश्वास.

4. आत्मसमर्पण..

5. हिंदूओ और मुसलमान में समन्वय के प्रयास.

6. सामान्य जन की भाषा में प्रचार.

7. मूर्ति पूजा में अविश्वास.

8. निरर्थक रीति रिवाज में अविश्वास.

प्रमुख प्रचारक.

1.**शंकराचार्य**. शंकराचार्य का जन्म **788** ईस्वी में मालाबार प्रदेश में कालिंदी नामक स्थान पर एक ब्राह्मण परिवार में हुआ इनके पिता का नाम शिव गुरु तथा उनकी माता का माता का नाम आरंभ्य था अल्पायु में ही सच्चे ज्ञान की प्राप्ति की खोज में इन्होंने घर बार त्याग दिया तथा सच्चे ज्ञान की खोज में जुड़ गए **32** वर्ष की आयु में उनका ध्यान अमरनाथ हो गया उन्होंने अध्याय दर्शन का प्रचार किया अद्वैत दर्शन का भाव है कि ब्रह्मा और संसार एक ही है उनके अनुसार आत्मा और परमात्मा एक है संसार तो माया है मनुष्य को चाहिए कि इस माया रुपी संसार में मैप खासकर ब्रह्मा की प्राप्ति करें इसका एकमात्र साधन प्रभु भक्ति है

2. रामानुजाचार्य.

3. नामदेव.

4. जय देव .

5. चैतन्य महाप्रभु.

6. रामानंद.

7. कबीर.

8. गुरु नानक देव जी.

भक्ति आंदोलन के प्रभाव.

1. हिंदू धर्म की रक्षा.

2. इस्लाम धर्म प्रसार की मंद गति.

3. बौद्ध धर्म की अवनति.

4. ब्राह्मणों के प्रभुत्व में कमी.

5. सिख मत का उदय.

6. हिंदू मुसलमान का आपसी मेल मिलाप.

7. जनसाधारण के दृष्टिकोण में व्यापकता.

8. नीची जातियों का उद्धार..

9. भाषा का विकास.

10 साहित्य का विकास.

11. हिंदू मुस्लिम कल का विकास.

12. अकबर की धार्मिक सहनशीलता की नीति.

13. शिव शक्ति का उदय.

14. मराठा शक्ति का उदय.

सच तो यह है की भक्ति आंदोलन में पूर्व मध्यकालीन भारत के वाविशेषताओं का वर्णन कीजिए

तावरण में नवीन जागृति उत्पन्न की धर्म को नवीन क्षितिज मिले समाज ने नवीन शिक्षाएं खोजी नई दिशाएं साहित्य नवीन धाराओं में प्रभावित हुआ और कलाओं एवं प्रशासनिक नीति में राष्ट्रीयता का समावेश हुआ समाज नई चमक दमक लेकर उभरा।

प्रश्न11.मुगलों के अंतर्गत समाज की प्रमुख विशेषताओ का वर्णन करे अथवा

मुगलकालीन सामाजिक श्रेणियां पर एक नोट लिखें

Ans. मुगलकालीन भारतीय समाज का प्रमुख आधार सामंतवाद था मुगलकालीन भारतीय समाज प्रमुख रूप से दो भागों में विभाजित था हिंदू समाज का मुस्लिम समाज इन दोनों वर्गों के जीवन स्थान पर्याप्त भिन्नता थी अकबर से लेकर औरंगजेब के शासनकाल के प्राथमिक वर्षों तक के उच्च पदों पर हसीन रहे तथा हिंदुओं में मुसलमान में भेदभाव नहीं किया गया मुस्लिम समाज प्रमुख रूप से दो भागों में बांटा हुआ था प्रथम विदेशी मुसलमान तथा दूसरा भारतीय मुसलमान विदेशी मुसलमान अब ईरानी आदि थे तथा भारतीय मुसलमान भी थे जो इस देश में रहते थे तथा जिनके पूर्वजों ने इस्लाम धर्म अपना दिया था मुस्लिम समाज विचार वर्गों में विभाजित था सैयद शेख मुगल तथा पठान थे

सामाजिक वर्ग.

1. **उलेमा वर्ग, 2. अमीर वर्ग, 3. जमीदार 4.किसान,5. कारीगर, 6 खेती हर मजदूर,7. दास**

नारी की स्थिति. प्राचीन भारत में नारी की स्थिति श्रेष्ठ कई जा सकती है उन्हें शिक्षा प्राप्त करने की स्वतंत्रता पूर्वक भाग लेने की राजनीति में भाग ले सकती थी मध्यकाल में नारी की स्थिति में गिरावट आई उन्हें भूगोल की वस्तु समझा जाने लगा इस काल में सती प्रथा बाल विवाह वेश्यावृत्ति जोहड़ आदि अनेक को प्रथाएं भी नारी समाज में घुस गए साइन हरम में हजारों स्त्रियां होती थी जिनके ऊपर अपरदन राष्ट्रीय खर्च की जाती थी अमीर लोग भी सम्राट का अनुसरण करते थे और बड़े-बड़े हराम रखते थे

1. **हराम** . मुगल काल में उच्च स्थान को हराम कहा जाता था जहां शासको की पत्नियों एवं रखैल निवास करती थी अकबर के हरम में बेगमों एवं रखेलों की संख्या **5000** की कट्टर धर्मन मुगल सम्राट औरंगजेब के काल में उनकी संख्या इकट्ठा कर **200** हो गई थी इन स्त्रियों को भोगविलास के लिए रखा जाता था मुगल सम्राट उनकी सुरक्षा के लिए सचेत रहते थे उनके लिए अलग-अलग स्नानागार एवं सुरक्षा बगीचे आदि बनवा जाते थे

2. **पर्दा प्रथा.** मुसलमान अपने साथ पर्दा प्रथा लाइव मुसलमान में पर्दा प्रथा को कठोरता से पालन किया जाता था जबकि हिंदू औरतों को भी उनकी इज्जत की रक्षा के लिए अपनाना शुरू किया बढ़ाने ने लिखा है कि बीमार औरतों के इलाज के लिए भी पुरुष चिकित्सकों को सम्राट या अमीर के जनन खाने में नहीं जाने दिया जाता था यदि कोई मुस्लिम महिला किसी कारणवश थोड़े से समय के लिए भी बुर्का हटा लेती थी तो उसे गंभीर परिणाम भगत में पढ़ते थे ताजपुर परिवार में पर्दे की प्रथा का प्रचलन कम था राजपूत स्त्रियों स्वतंत्रता पूर्व बिना पर्दे की शिकार खेलने जाती थी तथा युद्ध में भी जाती थी वह केवल अपने सिर पर दुपट्टा रखती थी निम्न परिवारों की स्त्रियों में पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था

3. **कन्या का जन्म अशुभ.** मुगल काल में राजपूत परिवारों में विशेषता लड़की का जन्म होना अशुभ माना जाता था कि जिस दिन मुझे लड़की प्राप्त होगी वह दिन बहुत भाग्यशाली होगा लगातार कन्या को जन्म देने वाली स्त्रियों को एक वार्तालाप मिल जाता था आत्मा की जन्म होने पर पूरा अधिकार खुशियां मनाता था उसकी लड़की की जन्म होने पर केवल माता ही खुशी मनाती थी एक छोटे से वर्ग में कन्या वध की प्रथा का भी प्रचलन

4. **बाल विवाह.** मुगल काल में बाल विवाह की प्रथा प्रचलित थी साथिया **8** वर्ष की आयु में ही लड़की या का विवाह कर दिया जाता था **16**वीं साड़ी के एक बंगाली कवि मुकुंदरम ने बताया है कि वह पिता बहुत भाग्यशाली होता है इसकी पुत्री का विवाह **9** वर्ष की आयु हो जाए

5. **बहु विवाह.** मुगल शासक अमीर वर्ग हिंदू राजा तथा प्रमुख सरदार अपने समर्थ के अनुसार एक से अधिक विवाह करते थे अकबर के इबादत खाना में उलेमा वर्ग ने निर्णय दिया था कि एक मुसलमान निकाय द्वारा चार तथा मुद्दा द्वारा कितनी भी स्त्रियां रख सकता है मुगल हरम में रखेलों की संख्या हजारों होती थी विवाहित पत्तियों में पहली विवाहिता पत्नी की प्रधानता होती थी मुगल हरम में जो बेगम सम्राट पर अपना प्रभाव स्थापित कर लेती थी उसी की प्रधानता रहती थी नूरजहां तथा मुमताज इसके उदाहरण हैं

6. **एक पत्नी प्रथा.** हिंदू व मुस्लिम समाज के साधारण वर्ग के लोग केवल एक विवाह करते थे पहली पत्नी के बांज होने की स्थिति में ही दूसरा विवाह किया जाता था

7. सती प्रथा.

8. **जौहर प्रथा.** सती प्रथा की तरह राजपूत महिलाओं में सामूहिक रूप से चिता में चल जाने की प्रथा भी प्रचलित थी जिसे जौहर व्रत कहा जाता था युद्ध में अपने पति की मृत्यु की पश्चात अपने सतीत्व की रक्षा के लिए यह स्त्रियां जोहर करती थी

9. **दहेज प्रथा**

10. **पत्नी के रूप में महिला की स्थिति.** बलिकाल में लड़की अपने माता-पिता के संरक्षण में रहती थी तथा विवाह के बाद उसकी सांस का नियंत्रण होता था सांस की आशाओं पर खरीदने उतरने वाली स्त्रियों को मुस्लिम समाज में तलाक दे दिया जाता था जबकि हिंदू समाज में उसकी स्थिति अत्यंत खराब होती थी परंतु सास के आधिपत्य से

अलग होने पर महिला घर की मुख्य कार्यकारी बन जाती थी पत्नी के रूप में स्त्री अपने पति के आश्रित के रूप में एक सामान्य सहभागी की तरह थी

11. **विधवाओं की स्थिति.** मुस्लिम समाज में विधवाओं की स्थिति हिंदुओं की अपेक्षा अच्छी थी वहां विधवा विवाह मुस्लिम समाज द्वारा मान्य था हिंदुओं में कुछ छोटी जातियों को छोड़कर विधवा विवाह वर्जित था विधवा के सामने दो ही विषय थेप्रथम वह आजीवन अपमानित होकर रहे तथा द्वितीय अपने पति के साथ जलकर सती हो जाए हिंदू समाज में विधवाओं की स्थिति आती सोचनीय थी उन्हें अपना जीवन अपने मायके में व्यतीत करना पड़ता था उन्हें बाल कटवाने पढ़ते थे वह आभूषण नहीं पहन सकती थी जिस श्रृंगार नहीं कर सकती थी विवाह जन्म एवं शुभ कार्य में भाग नहीं ले सकती थी परिवार में उन्हें उपेक्षा एवं अपमान का जीवन व्यतीत करना पड़ता था

12. **माता के रूप में नारी की स्थिति.** मां के रूप में एक स्त्री की समझ में सम्मानजनक स्थिति थी लड़की दुल्हन एवं विधवा के रूप में उसकी स्थिति अपमानजनक थी समकालीन स्रोतों से पता चलता है कि मुगल बादशाह अपनी मां का सम्मान करते थे तथा जब वे अपनी मां के पास जाते थे वह **19** सजदा एवं तस्लीम करते थे अपने जन्मदिन पर मुगल बादशाह अपनी बेगमों एवं अमीरों के साथ अपनी मां का आशीर्वाद लेने जाते थे राजपूत से अधिक मां का सम्मान और कोई नहीं कर सकता था मेवाड़ का राणा संग्राम सिंह द्वितीय प्रतिदिन भोजन के पहले अपनी मां के दर्शन करने जाता था अपनी मां के आदेश पर चित्तौड़ पर अकबर के आक्रमण के समय फत्ता ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी

13. **स्त्री के वित्तीय अधिकार.** एक मुस्लिम महिला को विवाह के उपरांत भी अपने पिता की संपत्ति में हिस्सा लेने का अधिकार था जबकि हिंदू लड़की शादी के उपरांत पिता की संपत्ति की अधिकारी नहीं होती थी मुस्लिम महिला को मेहर द्वारा संपत्ति अधिकार मिले थे जबकि एक हिंदू महिला अपने पति के पिता की संपत्ति की भी अधिकारी नहीं होती थी एक हिंदू पत्नी को रहने तथा अपना दैनिक खर्च चलाने की अतिरिक्त चल संपत्ति जैसे आभूषण सोना चांदी आदि मिलता था इस प्रकार वैधानिक दृष्टि से महिलाओं को प्रत्येक क्षेत्र में निर्भरता की स्थिति में ला दिया था छात्र नंबर की स्त्री अपने पति के साथ प्रत्येक कल में भाग लेती थी कई बार भी यह दुकान भी चलती थी

14. **वेश्याओं की स्थिति.** मुगल काल में गायिकाओं एवं वेश्याओं का अलग-अलग था वह अपनी कला द्वारा अनेक अवसरों पर सही दरबार में एवं अमीरों के यहां मनोरंजन करती थी विवाह जन्म तथा अन्य पर्वों पर अमीर वर्ग के लोग वेश्याओं को बुलाते थे अकबर ने नगर के बाहर वेश्याओं का एक मोहल्ला बना दिया था तथा इसका नाम शैतान पूरी रखा था गोलकुंडा नगर में **20000** वेश्याएं दरोगा के रजिस्टर में दर्ज थी औरंगजेब ने वेश्यावृत्ति पर प्रतिबंध लगा दिया था परंतु फिर भी ऊपर था जारी रही अनेक विषय धनी तथा अमीरों की तरह जीवन व्यतीत करती थी मोहम्मद साहब के शासनकाल में नूर भाई राजधानी दिस्त्रियां विद्वान एवं प्रशासक के रूपल्ली की प्रसिद्ध वेश्या थी यह बड़ी धनवान थी ना दिशा उसके संगीत तथा नृत्य से बड़ा प्रभावित हुआ था तथा उसने उसे फारस ले जाने की इच्छा व्यक्त की थी इस प्रकार वेश्याओं के कारण मुगल समाज पतन की तरफ जा रहा था

15 **स्त्रियां विद्वान एवं प्रशासक के रूप में.** स्त्रियों से संबंधित अनेक व्यक्तियों को बावजूद भी मुगल कालीन भारत में अनेक विद्वान उनकौशल प्रशासनिक स्त्रियां थी हुमायूं नामा के लेखिका कुल वजन बेगम मीराबाई देवल रानी रूपवती सलीमा सुल्तान नूर जहां स्थल के प्रसिद्ध कवित्री थी गोंडवाना की रानी दुर्गावती जहां खाली मरदान की पुत्री साहब भाजी यीशु की प्रमुख प्रशासनिकांत थी इस प्रकार मुगल काल में नारी की जीवन स्तर में प्राप्त करता था एक तरफ कुछ वर्क की स्त्रियों का ऊंचा जीवनसाथी तथा उनके वस्त्र आवास खानपान आभूषण श्रंगार आदि छोटी के थे फिर शौकीन तथा ऐश्वर्या का जीवन बताती थी तो दूसरी तरफ निम्न वर्ग की स्त्रियों को वे सभी सुविधा प्राप्त नहीं थी उनका रहन-सहन खान पोशाक आभूषण एवं साज सज्जू आदि साधारण होता था उनके बीच शिक्षा का प्रचलन प्राय नहीं था